महामहिम राज्यपाल श्री रामनरेश यादव का कला विद्या मंदिर स्कूल, इंदौर के वार्षिकोत्सव में उद्बोधन

स्थान : इंदौर दिनांक : 19 फरवरी 2013 समय : दोपहर 3 बजे

कला विद्या मंदिर के वार्षिक उत्सव में उपस्थित होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। बच्चों के मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम को देखकर मैं बहुत खुश हूं। ये बच्चे ही कल के भारत के कर्णधार हैं।

मैं आज विद्यार्थियों से कहना चाहता हूं कि जो बच्चे मन लगाकर पढ़ाई करते हैं वे हमेशा कामयाब होते हैं और आगे जब वे प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं तो उन्हें कठिनाई नहीं होती है।

बच्चों आज प्रतिस्पर्धा का युग है। अगर आपने अभी से स्कूल में शिक्षक जो पढ़ाते हैं उसको ध्यान से नहीं सुना, उसे मस्तिष्क में नहीं बिठाया तो आगे आने वाली प्रतियोगिताओं में कैसे पास हो सकोगे....? इसलिए जरूरी है कि अभी से आप ध्यान लगाकर कठिन परिश्रम के साथ पढ़ो।

समय बदल रहा है। पहले प्राइमरी शिक्षा प्राप्त करने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए गांव से बाहर जाना पड़ता था। आज जगह-जगह स्कूल हैं, आने जाने की सुविधाएं हैं। रंग- बिरंगी ड्रेस पहनने को मिलती हैं। इन सब सुविधाओं के साथ शिक्षा प्राप्त करने के लिए दृढ़ इच्छा शक्ति, संघर्ष और कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है।

विद्या मंदिर स्कूल हमारी प्राचीन परम्परा, संस्कृति और सभ्यता के संवाहक हैं। यहां से निकलने वाले बच्चे संस्कारित,चरित्रवान और नैतिकता से परिपूर्ण होते हैं। शिक्षा के इन मंदिरों में गुरूओं, माता-पिता और अपने बड़े बुजुर्गों का सम्मान और आदर करना सिखाया जाता है।

यह मंदिर बच्चों की शिक्षा की पहली सीढ़ी है। बच्चे मिट्टी की तरह होते हैं। इन्हें जिस तरह के आकार में ढाला जायेगा वे उसी आकार में ढल जायेंगे। वर्तमान दौर में प्रौद्योगिकी और टेक्नालोजी के इस युग में आज टेलीविजन,मोबाइल और न जाने कितनी नई-नई तकनीकें जन्म ले रही हैं वे जितने उपयोगी हैं उतना ही इनका बच्चों के जीवन पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इसलिए बच्चों को भारतीय संस्कृति, सभ्यता और परम्पराओं की शिक्षा देना बहुत आवश्यक हो गया है। गुरू-शिष्य का सम्बन्ध और गुरू का सम्मान करना इन्हें सिखाना होगा। हमारे यहां

कहा गया है गुरूब्र्ाह्मा, गुरूर्विष्णु: गुरूर्देवो महेश्वर:, गुरू साक्षात परम ब्राह्म तस्मै श्री गुरूवे: नम:। शिक्षकों से मेरा आग्रह है कि वे इस और ध्यान दें और बच्चों को नैतिकता और अनुशासन का पाठ पढ़ायें।

बच्चों में विनय न हो, शील न हो, अच्छे संस्कार न हो तो साफ है कि हमारी शिक्षा में ही कुछ कमी है। इस कमी को समय रहते दूर करना चाहिए। शिक्षा के आधुनिकीकरण के साथ-साथ विद्यार्थियों में उच्च जीवन मूल्य,संस्कार, आध्यात्मिकता और नैतिकता कैसे आये, यह भी सोचना होगा और इस ओर पहल करनी होगी।

विद्यालय और शिक्षकों का उद्देश्य विद्यार्थियों में शैक्षणिक योग्यता के अतिरिक्त अन्य सहायक गतिविधियों के द्वारा उनका सर्वांगीण विकास करने की प्रतिबद्धता है ताकि विद्यार्थी परस्पर सहयोग करते हुए प्रतिस्पर्धा के दौर में पूर्ण क्षमता के साथ जीवन में मिलने वाली चुनौतियों का सामना कर सकें तथा विषम परिस्थितियों का मुकाबला जीवटता और साहस के साथ कर सकें।

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि इस विद्यालय के अनेक विद्यार्थी कुशल डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, वैज्ञानिक बनकर न केवल अपने देश में बल्कि विदेशों में अपनी सेवा देकर विद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।

आज के कार्यक्रम में बच्चों ने अपने उत्कृष्ट प्रतिभा से मुझे बहुत प्रभावित किया है। जिनका उद्देश्य ऊंचा होता है तो वे निश्चित ही उन्नति के शिखर पहुंचते हैं। मैं आप सबको एक बार पुन: बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

जय हिन्द।